GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

भारतीय ज्ञान प्रणाली का शिक्षक शिक्षा में शैक्षिक पद्धतियों पर प्रभाव

Dr. Monika Gupta,
Asst. Regional Director, Dr. Babasaheb Ambedkar Open University,
Monikagupta040319@gmail.com

परिचय

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक प्राचीन और विविध ज्ञान का संग्रह है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों वर्षों में इकट्ठा हुआ है। यह दर्शन, आत्मा, विज्ञान, साहित्य और कला में निहित है और यह ज्ञान की एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और नैतिकता जैसे विभिन्न विषयों को शामिल किया गया है। इस प्रणाली का केंद्रीय सिद्धांत ज्ञान के आपसी संबंध, अनुभवात्मक शिक्षा का महत्व और मानव अस्तित्व की गहरी विचारशील समझ है। ये सिद्धांत भारतीय जीवनशैली में गहरे रूप से निहित हैं और शैक्षिक पद्धतियों, विशेषकर शिक्षक शिक्षा में, गहरा प्रभाव डालते हैं। यह पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा की शैक्षिक पद्धतियों में एकीकृत करने की संभावनाओं का अन्वेषण करता है। यह अध्ययन करता है कि कैसे IKS को अपनाने से शिक्षक शिक्षा में परिवर्तन लाया जा सकता है, जिससे अधिक समग्र और छात्र-केंद्रित शिक्षण और अध्ययन की दिशा में योगदान किया जा सकता है। IKS की शैक्षिक दार्शनिकताओं को अपनाकर शिक्षक शिक्षा में न केवल शैक्षिक रणनीतियाँ समृद्ध हो सकती हैं, बल्कि यह एक अधिक समावेशी, नैतिक और समग्र शैक्षिक ढांचे के विकास में भी मदद कर सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली: एक अवलोकन

भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल जानकारी के अलग-अलग टुकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो ज्ञान को जीवन के ताने-बाने से जोड़कर देखती है। IKS विभिन्न परंपराओं पर आधारित है, जिसमें वेदांत ज्ञान, आयुर्वेद, योग,

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

दर्शनशास्त्र और गुरु-शिष्य परंपरा से संप्रेषित मूलभूत ज्ञान शामिल हैं। इसके मूल में "वेदांत" का सिद्धांत है – सत्य, ज्ञान और ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग।

ज्ञान के प्रति समग्र दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका समग्र दृष्टिकोण है। पारंपरिक शिक्षण प्रणालियों के विपरीत, IKS विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान के आपसी संबंधों पर जोर देती है। यह परस्पर जुड़े हुए ज्ञान से एक व्यापक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास को समान रूप से महत्व दिया जाता है। इसका उद्देश्य केवल तथ्यों का संचय नहीं है, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो ज्ञान, चेतना और नैतिक मूल्यों को समझता हो।

यह दृष्टिकोण आधुनिक शैक्षिक मॉडल्स से स्पष्ट रूप से भिन्न है, जिनमें ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को अक्सर अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से संज्ञानात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक समझ और आध्यात्मिक विकास को प्रायः नजरअंदाज कर दिया जाता है। इसके विपरीत, भारतीय प्रणाली मन, शरीर और आत्मा की एकता पर बल देती है, और शिक्षा को एक ऐसे परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में देखती है, जो सम्पूर्ण व्यक्ति के विकास की दिशा में काम करती है।

अनुभवात्मक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) अनुभवात्मक शिक्षा को बहुत महत्व देती है, जो एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सीधे अनुभव से प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देती है, बजाय इसके कि केवल ज्ञान का निष्क्रिय रूप से अवशोषण किया जाए। यह परंपरागत शिक्षक-शिष्य संबंध में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, विशेष रूप से गुरु-शिष्य परंपरा में, जो हाथों से सीखने, आत्म-प्रश्न और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है। अनुभवात्मक शिक्षा सक्रिय भागीदारी और सगाई को बढ़ावा देती है, जहाँ छात्र केवल जानकारी का प्राप्तकर्ता नहीं होता, बल्कि ज्ञान का एक सक्रिय सह-निर्माता होता है। IKS की कई शाखाएँ, जैसे योग और आयुर्वेद, अनुभवात्मक ज्ञान को शिक्षा प्रक्रिया के

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

केंद्रीय तत्व के रूप में मान्यता देती हैं। जीवन का अनुभव–चाहे वह योग के अभ्यास के माध्यम से सीखना हो या क्षेत्र कार्य के माध्यम से औषधीय जड़ी-बूटियों को समझना–इन परंपराओं में ज्ञान अर्जन का आधार बनता है। यह सैद्धांतिक शिक्षा या रट्टा लगाने की परंपरा से भिन्न है, जो अक्सर कई पारंपरिक शैक्षिक प्रणालियों में प्रयुक्त होती है।

शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक के रूप में

IKS में, शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान के प्रसारक के रूप में नहीं, बल्कि एक सहायक, मार्गदर्शक और छात्र की यात्रा में एक संरक्षक के रूप में देखी जाती है। इस संबंध में शिक्षक के चरित्र, ज्ञान और नैतिक स्थिति का महत्व होता है। शिक्षक को "रोल मॉडल" के रूप में देखना भारतीय शैक्षिक दर्शन का आधार है। गुरु-शिष्य परंपरा में, गुरु (शिक्षक) ज्ञान को व्यक्तिगत उदाहरण और छात्र के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से प्रदान करते हैं। शिक्षक की भूमिका छात्रों को आत्म-खोज, आत्म-साक्षात्कार और समझ की ओर अग्रसर करना होती है, न कि केवल उत्तर प्रदान करना। यह समग्र दृष्टिकोण शिक्षक पर यह जिम्मेदारी डालता है कि वे उन मूल्यों और सिद्धांतों को आत्मसात करें जो वे अपने छात्रों को सिखाते हैं, जिससे एक ऐसा वातावरण बने जहाँ छात्र को नैतिक ईमानदारी, बौद्धिक जिज्ञासा और भावनात्मक लचीलापन विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसलिए, शिक्षक शिक्षा में शिक्षक केवल शैक्षिक ज्ञान के प्रसारक नहीं होते, बल्कि नैतिक और आचारिक मार्गदर्शक के रूप में देखे जाते हैं, जो छात्रों के मूल्यों को आकार देते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का शैक्षिक पद्धतियों पर प्रभाव

भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षकों की शैक्षिक पद्धतियों में एकीकृत करने का गहरा प्रभाव हो सकता है, न केवल शिक्षकों पर, बल्कि छात्रों पर भी। यह पारंपरिक शैक्षिक मॉडल्स की बजाय एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है, जो अक्सर रचनात्मकता, भावनात्मक विकास या आलोचनात्मक सोच के लिए कम जगह छोड़ते हैं। IKS को शिक्षक शिक्षा में समाहित करके, हम एक अधिक समग्र और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा दे

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

सकते हैं जो छात्र के विकास के सभी पहलुओं–बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक–को पोषित करता है।

अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना

अनुभवात्मक शिक्षा IKS के प्रमुख स्तंभों में से एक है और इसे शिक्षक शिक्षा में एकीकृत किया जा सकता है ताकि रट्टा याद करने से परे गहरे, व्यावहारिक ज्ञान की ओर ध्यान केंद्रित किया जा सके। शिक्षक शिक्षा में IKS से प्रेरणा लेते हुए, शिक्षक शिक्षकों को ऐसे पाठ्यक्रम डिजाइन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जो हाथों से करने वाली गतिविधियों, आलोचनात्मक सोच और ज्ञान के वास्तविक दुनिया में अनुप्रयोग को बढ़ावा देते हों।

उदाहरण स्वरूप, पारंपरिक प्रथाओं जैसे ध्यान, योग या क्षेत्र-आधारित शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करना शिक्षक शिक्षकों को एक अधिक संतुलित और विचारशील शिक्षण शैली विकसित करने में मदद कर सकता है। इन प्रथाओं के साथ जुड़कर, शिक्षक शिक्षक अधिक इंटरएक्टिव और सहभागी शिक्षण वातावरण बना सकते हैं, जिससे छात्रों को विषय से गहरे स्तर पर जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षक शिक्षा में अनुभवात्मक शिक्षा छात्रों में सीखने के प्रति एक प्रेम को भी बढ़ावा दे सकती है, क्योंकि उन्हें अपनी पढ़ाई को जिज्ञासा, भागीदारी और खुले दिमाग से दृष्टिकोण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से विज्ञान, गणित और इतिहास जैसे विषयों में प्रभावी हो सकता है, जहां अमूर्त (abstract) अवधारणाएँ अक्सर वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जुड़ी हुई नहीं लगतीं।

छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ना

IKS द्वारा समर्थित शिक्षक की भूमिका को एक मार्गदर्शक के रूप में अपनाने से शिक्षक शिक्षकों को एक अधिक छात्र-केंद्रित शिक्षण वातावरण बनाने में मदद मिलती है। यह बदलाव छात्रों को अपनी शिक्षा की जिम्मेदारी लेने के लिए सशक्त बनाता है, जिससे वे सवाल पूछने, उत्तर खोजने और सहयोगी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित होते हैं, जो गहरे ज्ञान को बढ़ावा देती हैं।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

ऐसे वातावरण में, शिक्षक शिक्षक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं, आत्म-निर्देशित शिक्षा और आलोचनात्मक जांच को बढ़ावा देते हुए। छात्र अब केवल जानकारी के प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि शिक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी होते हैं। यह दृष्टिकोण समस्या हल करने, रचनात्मकता और स्वतंत्र सोच जैसी क्षमताओं को बढ़ावा देता है, जो 21वीं सदी में सफलता के लिए आवश्यक हैं।

शिक्षक शिक्षा में मूल्यों और नैतिकताओं का समावेश

IKS शिक्षा में नैतिकता, धर्म और मूल्यों पर महत्वपूर्ण बल देता है। इन सिद्धांतों को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा सकता है, ताकि भविष्य के शिक्षकों में सामाजिक जिम्मेदारी, सहानुभूति और नैतिक आचरण की भावना विकसित की जा सके। शिक्षक शिक्षक इन मूल्यों को अपनी शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से और जिस पाठ्यक्रम और शैक्षिक रणनीतियों को वे अपनाते हैं, उनके माध्यम से सिखा सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, भारतीय संदर्भ में धर्म (सत्य या नैतिक कर्तव्य) की अवधारणा शिक्षक शिक्षकों को समावेशी, सम्मानजनक और समान्य शिक्षा वातावरण बनाने में मार्गदर्शन कर सकती है। नैतिक सिद्धांतों जैसे निष्पक्षता, सहानुभूति और जिम्मेदारी पर बल देते हुए, शिक्षक शिक्षक अपने छात्रों में एक अधिक न्यायपूर्ण और मानवतावादी समाज बनाने का महत्व डाल सकते हैं।

शिक्षक शिक्षा में मूल्यों और नैतिकताओं का समावेश न केवल छात्रों के लिए लाभकारी है, बल्कि यह भविष्य के शिक्षकों को एक नैतिक रूप से मजबूत और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनाने में भी मदद करता है। क्योंकि शिक्षक पीढ़ियों को प्रभावित करते हैं, उनके द्वारा धारण किए गए मूल्य शैक्षिक प्रणाली में फैलते हैं, जो एक नैतिक और मूल्य-आधारित समाज का निर्माण करते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षक शिक्षकों की शैक्षिक पद्धतियों को रूपांतरित करने की अपार क्षमता है। IKS को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एकीकृत करके, हम शिक्षा और सीखने के लिए एक अधिक समग्र, छात्र-केंद्रित और नैतिक रूप से मजबूत दृष्टिकोण की

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

ओर बढ़ सकते हैं। अनुभवात्मक शिक्षा पर बल, शिक्षक के रूप में मार्गदर्शक की भूमिका, और मूल्यों और नैतिकताओं का पोषण तेजी से विकसित होते शैक्षिक परिदृश्य की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं।

जब शिक्षक शिक्षकों को IKS के दृष्टिकोण और ज्ञान से सशक्त किया जाता है, तो वे अधिक संतुलित और समावेशी शिक्षण वातावरण बना सकते हैं। ये वातावरण न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को भी समर्थन करते हैं। शिक्षक शिक्षा में IKS का समावेश केवल छात्रों के लिए लाभकारी नहीं है, बल्कि यह शिक्षकों को भी समृद्ध करता है, जिससे वे सांस्कृतिक, दार्शनिक और नैतिक परंपराओं की गहरी समझ प्राप्त करते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा में शामिल करने से सम्पूर्ण शैक्षिक प्रणाली में एक तरंग प्रभाव उत्पन्न हो सकता है, जो एक अधिक विचारशील, आत्म-विश्लेषक और नैतिक समाज की ओर अग्रसर करता है। IKS के समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर, शिक्षक शिक्षक एक ऐसी पीढ़ी को पाल सकते हैं, जो न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम हो, बल्कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान, नैतिक रूप से जिम्मेदार और आध्यात्मिक रूप से समर्पित हो।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षक शिक्षा में एकीकृत करना शैक्षिक प्रणाली को एक अधिक समावेशी, व्यापक और रूपांतरकारी शक्ति में बदलने का एक अद्वितीय अवसर प्रस्तुत करता है, जो अंततः ज्ञान, सहानुभूति और बुद्धिमत्ता पर आधारित एक समग्र समाज के विकास में योगदान करेगा।

References:

Aidoo, B. (2023). Teacher educators experience adopting problem-based learning in science education. *Education Sciences*.

Anyichie, A. C., Butler, D. L., Perry, N. E., & Nashon, S. (2023). Examining classroom contexts in support of culturally diverse learners' engagement: An integration of self-regulated learning and culturally responsive pedagogical practices. *Frontline Learning Research*.

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

Gu, M., Lee, C., & Tan, J. (2022). A translanguaging and trans-semiotizing perspective on subject teachers' linguistic and pedagogical practices in EMI programme. *Applied Linguistics Review, 14*, 1589–1615.

Kerimbayev, N., Umirzakova, Z., Shadiev, R., & Jotsov, V. (2023). A student-centered approach using modern technologies in distance learning: A systematic review of the literature. *Smart Learning Environments, 10*, 1–28.

Mahesh, K. M., Aithal, P. S., & R. S., S. K. (2023). Literature review on Indian ancient university in imparting holistic and multidisciplinary: To create Indian knowledge system (IKS). *International Journal of Philosophy and Languages (IJPL)*.

Malambo, P. (2023). Conceptions of mathematics teacher educators depicting essential mathematics teacher educator knowledge. *European Journal of Mathematics and Science Education*.

Rajoura, C., & Rajoura, N. (2022). Corporate lessons from Indian knowledge system: Learning from the glorious past for building a strong India. *Sachetas*.

Shilton, K. (2018). Values and ethics in human–computer interaction. *Foundations and Trends® in Human–Computer Interaction, 12*, 107–171.

Tang, K. (2023). Student-centered approach in teaching and learning: What does it really mean? *Acta Pedagogia Asiana*.

Ugale, C., & Ugale, A. (2023). Indian knowledge system's taxonomical, iconic, & infographic 'Chaitanyatma Model' depicting research levels. *International Journal for Multidisciplinary Research*.

Wang, L. (2023). The impact of student-centered learning on academic motivation and achievement: A comparative research between traditional instruction and student-centered approach. *Journal of Education, Humanities and Social Sciences*.

Yakavets, N., Winter, L., Malone, K., Zhontayeva, Z., & Khamidulina, Z. (2022). Educational reform and teachers' agency in reconstructing pedagogical practices in Kazakhstan. *Journal of Educational Change, 24*, 727–757.